

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 13-10-2025

विषय सूची

- » भारत में रोगों का भार संक्रामक रोगों से गैर-संचारी रोगों की ओर स्थानांतरित
- » औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) का आधार वर्ष संशोधन
- » हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन
- » प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना और दलहन आत्मनिर्भरता मिशन

संक्षिप्त समाचार

- » थिटू द्वीप
- » डूरंड रेखा
- » थैलेसीमिया
- » मैत्री II: अंटार्कटिका में भारत का नया मोर्चा
- » अंतर्राष्ट्रीय ब्लू फ्लैग प्रमाणन
- » IUCN विश्व विरासत आउटलुक 2025
- » अभ्यास ऑस्ट्राहिंड(AUSTRAHIND) 2025
- » केंटन आर. मिलर पुरस्कार
- » एबेल पुरस्कार 2025

भारत में रोगों का भार संक्रामक रोगों से गैर-संचारी रोगों की ओर स्थानांतरित

समाचारों में

- द लैंसेट में प्रकाशित नवीनतम ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज (GBD) रिपोर्ट के अनुसार, गैर-संचारी रोग (NCDs) अब वैश्विक मृत्यु दर का लगभग दो-तिहाई हिस्सा बन चुके हैं। और, 1990 से 2023 तक, भारत में गैर-संचारी रोग (NCDs) तीव्रता से मृत्यु के प्रमुख कारण बन गए हैं, जो संक्रामक रोगों को पीछे छोड़ चुके हैं।

गैर-संचारी रोग क्या हैं?

- गैर-संचारी रोग (NCDs), या दीर्घकालिक रोग, वे स्थितियाँ हैं जो लंबे समय तक बनी रहती हैं और जिनका कारण आनुवंशिक, शारीरिक, पर्यावरणीय और व्यवहारिक कारकों का मिश्रण होता है।
- मुख्य प्रकारों में शामिल हैं:
 - हृदय संबंधी रोग (जैसे दिल का दौरा, स्ट्रोक)
 - कैंसर
 - श्वसन संबंधी रोग (जैसे अस्थमा)
 - मधुमेह

परिवर्तन के कारण

- जनसांख्यिकीय संक्रमण:** प्रजनन दर में गिरावट और जीवन प्रत्याशा में वृद्धि से वृद्ध जनसंख्या में पुरानी बीमारियों की संभावना बढ़ी।
- शहरीकरण और जीवनशैली में बदलाव:** गतिहीन जीवनशैली, उच्च कैलोरी वाले प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ, तनाव, शराब और तंबाकू का सेवन।
- पर्यावरणीय कारक:** वायु प्रदूषण, रासायनिक संपर्क, और अत्यधिक तापमान जैसी स्थितियाँ श्वसन एवं हृदय रोगों को बढ़ावा देती हैं।
- सामाजिक-आर्थिक विकास:** संक्रामक रोगों से नियंत्रण की ओर ध्यान से जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों की ओर झुकाव — “समृद्धि की बीमारियाँ।”
- स्वास्थ्य प्रणाली का विकास:** टीकाकरण और स्वच्छता में सफलता से संक्रामक रोगों में कमी आई — लेकिन NCDs की रोकथाम के लिए प्रणाली पिछड़ गई।

प्रभाव

- उच्च मृत्यु दर:** NCDs निम्न और मध्यम आय वाले देशों को असमान रूप से प्रभावित करते हैं, जहाँ वैश्विक NCD मृत्यु का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा होता है।
- आर्थिक बोझ:** NCDs भारत को प्रति वर्ष लगभग \$250 बिलियन की उत्पादकता हानि पहुंचाते हैं (WHO अनुमान)। स्वास्थ्य पर व्यक्तिगत व्यय >50% बना हुआ है।
- स्वास्थ्य प्रणाली पर दबाव:** पुरानी बीमारियों का प्रबंधन दीर्घकालिक देखभाल, निदान और बुनियादी ढांचे की मांग करता है।
- सामाजिक परिणाम:** मध्य आयु वर्ग प्रभावित होता है, जिससे कार्यशील जनसंख्या पर असर पड़ता है।
- जीवन की गुणवत्ता में गिरावट:** NCDs अक्सर विकलांगता, मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं और सामाजिक अलगाव का कारण बनते हैं।
- वैश्विक स्वास्थ्य प्रतिबद्धताएँ:** भारत की SDG-3.4 (2030 तक NCDs से समयपूर्व मृत्यु को एक-तिहाई तक कम करना) की दिशा में प्रगति धीमी है।

उठाए गए कदम

- गैर-संचारी रोगों की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (NP-NCD)** जिला और सामुदायिक स्तर पर स्क्रीनिंग, निदान एवं उपचार का समर्थन करता है।
- आयुष्मान भारत हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर** निवारक देखभाल और जीवनशैली परामर्श को बढ़ावा देते हैं।
- प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना** हृदय, मधुमेह और कैंसर की देखभाल के लिए सस्ती दवाएं उपलब्ध कराती है।
- फिट इंडिया मूवमेंट और ईट राइट इंडिया** स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहित करते हैं।

सुझाव

- डॉ. सौम्या स्वामीनाथन जैसे विशेषज्ञों का मानना है कि भारत का तीव्र स्वास्थ्य संक्रमण — जो औद्योगिकीकरण,

- शहरीकरण और वैश्वीकरण में देरी से प्रेरित है — NCDs में वृद्धि का कारण बना है।
- लंबी जीवन प्रत्याशा लेकिन उच्च रोगग्रस्तता के साथ, अब स्वस्थ वृद्धावस्था और NCDs की रोकथाम को प्राथमिकता देना अत्यंत आवश्यक है।
- NCDs को नियंत्रित करने के लिए उनके परिवर्तनीय जोखिम कारकों को कम करने की आवश्यकता है — वह भी कम लागत और प्रभावी रणनीतियों के माध्यम से।
- रोकथाम और नियंत्रण के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा, वित्त और अन्य क्षेत्रों को शामिल करते हुए एक व्यापक, बहु-क्षेत्रीय दृष्टिकोण आवश्यक है।
- IIP के आधार वर्ष संशोधन के लिए MoSPI की तकनीकी सलाहकार समिति (TAC-IIP) ने संरचनात्मक और तकनीकी बदलावों को समाहित करने हेतु 2022–23 को आधार वर्ष बनाने की सिफारिश की है।
- संयुक्त राष्ट्र ने अनुशंसा की है कि सूचकांक संख्या की आधार अवधि प्रत्येक पाँच वर्षों में संशोधित की जानी चाहिए।

Sources: IE

औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) का आधार वर्ष संशोधन

संदर्भ

- सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) का आधार वर्ष 2022–23 करने जा रहा है, जिसे GDP आकलन के लिए प्रस्तावित नए आधार वर्ष के साथ संरेखित किया जाएगा।

आधार वर्ष को संशोधित करने की आवश्यकता

- IIP औद्योगिक गतिविधि का एक प्रमुख अल्पकालिक संकेतक है, जिसका उपयोग सरकार, RBI और शोधकर्ता नीति निर्माण, पूर्वानुमान एवं राष्ट्रीय लेखांकन के लिए करते हैं।
- पिछली बार IIP का आधार वर्ष 2011–12 में संशोधित किया गया था और तब से तकनीकी बदलाव, उत्पाद विविधीकरण और डिजिटलीकरण ने औद्योगिक उत्पादन को काफी बदल दिया है।
 - भारत की परिवर्तित आर्थिक संरचना: सेवाएँ सकल मूल्य वर्धन (GVA) में 62.5% योगदान देती हैं, कृषि 15%, और उद्योग 22%, जो विकास की संभावनाओं को दर्शाता है।

औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP)

- IIP एक सूचकांक है जो अर्थव्यवस्था के विभिन्न उद्योग समूहों की वृद्धि दर को एक निर्धारित अवधि में दर्शाता है।
- IIP को उत्पादन सापेक्षताओं का सरल भारित अंकगणितीय औसत लेकर लासपेयर के सूत्र के माध्यम से संकलित किया जाता है।
- यह एक समग्र संकेतक है जो निम्नलिखित उद्योग समूहों की वृद्धि दर को मापता है:
 - मुख्य क्षेत्र: खनन, विनिर्माण, और विद्युत
 - उपयोग-आधारित क्षेत्र: मूल वस्तुएँ, पूंजीगत वस्तुएँ, और मध्यवर्ती वस्तुएँ
- जारीकर्ता: केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (CSO), सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय
- आधार वर्ष: 2011–2012
- आवधिकता: मासिक आधार पर

नए IIP श्रृंखला में प्रस्तावित सुधार

- विस्तारित दायरा और कवरेज: गुड्स बास्केट को अद्यतन किया जा रहा है ताकि पुराने उत्पादों (जैसे फ्लोरोसेंट ट्यूब, केरोसिन) को हटाया जा सके और आधुनिक वस्तुओं जैसे LED बल्ब, लैपटॉप, टीके, और विमान घटकों को शामिल किया जा सके।
 - प्रथम बार, लघु खनिज और गैस आपूर्ति को शामिल किया जाएगा, जो औद्योगिक उत्पादन सूचकांक के लिए अंतरराष्ट्रीय सिफारिशों (IRIIP, 2010) के अनुरूप है।

- **डेटा और वर्गीकरण का परिष्करण:** MoSPI ने 276 “अन्यत्र वर्गीकृत नहीं” (n.e.c.) वस्तुओं की समीक्षा की, जो किसी विशिष्ट श्रेणी में फिट नहीं होती थीं।
 - ▲ MoSPI ने इनमें से 95% वस्तुओं को विशिष्ट उत्पाद श्रेणियों में पुनः वर्गीकृत किया, केवल 5% वस्तुएँ ही असंबद्ध रहीं।
- **अक्रिय कारखानों का प्रतिस्थापन:** पहले, बंद या उत्पादन बदल चुके कारखाने नमूने में बने रहते थे, जिससे डेटा विकृत होती थी।
 - ▲ नया प्रणाली ऐसे कारखानों के समय पर प्रतिस्थापन की कार्यप्रणाली प्रस्तुत करती है, जिससे निरंतरता और तुलनात्मकता सुनिश्चित होती है।
- **मौसमी समायोजन:** मौसमी रूप से समायोजित IIP श्रृंखला शुरू की जाएगी ताकि अंतर्निहित प्रवृत्तियों और चक्रीय आंदोलनों की बेहतर पहचान हो सके, जिससे अल्पकालिक आर्थिक पूर्वानुमान एवं नीति विश्लेषण में सुधार होगा।
- **डिजिटल डेटाबेस के साथ एकीकरण:** GST डेटा का एकीकरण और औद्योगिक सांख्यिकी में डिजिटल अपनापन सटीकता बढ़ाएगा, रिपोर्टिंग में देरी को कम करेगा, और वास्तविक समय निगरानी को बेहतर बनाएगा।

चुनौतियाँ

- **डेटा अंतराल और कवरेज समस्याएँ:** कुछ उप-क्षेत्र, विशेष रूप से MSMEs और अनौपचारिक इकाइयाँ, डेटा सीमाओं के कारण कम प्रतिनिधित्व में रह सकती हैं।
- **डेटा संग्रह की समयबद्धता:** विविध औद्योगिक प्रतिष्ठानों से वास्तविक समय डेटा प्रवाह सुनिश्चित करना एक चुनौती बना हुआ है।
- **संक्रमण प्रबंधन:** पुरानी श्रृंखला के साथ तुलनात्मकता सुनिश्चित करना और संक्रमण के दौरान सांख्यिकीय अंतराल को संभालना सावधानीपूर्वक समायोजन की मांग करता है।

आगे की राह

- **औद्योगिक सर्वेक्षणों को सुदृढ़ करना:** वार्षिक उद्योग सर्वेक्षण (ASI) की कवरेज को व्यापक बनाना और

तकनीक-आधारित रिपोर्टिंग तंत्र का उपयोग करना।

- **डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र के साथ एकीकरण:** ई-वे बिल, GSTN, और MCA21 डेटा का उपयोग करके औद्योगिक सांख्यिकी की समयबद्धता एवं विश्वसनीयता को बढ़ाना।
- **आवधिक अद्यतन:** आधार वर्ष का संशोधन प्रत्येक 5-7 वर्षों में सुनिश्चित करना ताकि भारत की तीव्रता से बदलती औद्योगिक संरचना के साथ सामंजस्यशील बना रहे।
- **क्षमता निर्माण:** डेटा संग्रह और सत्यापन के लिए राज्य और स्थानीय सांख्यिकी कर्मचारियों को प्रशिक्षित करना ताकि स्रोत पर डेटा की गुणवत्ता में सुधार हो सके।

Source: IE

हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन

समाचारों में

- हिमाचल प्रदेश में किसान तीव्रता से प्राकृतिक खेती को अपना रहे हैं, जिसे राज्य की प्रमुख योजना ‘प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना (PK3Y)’ का समर्थन प्राप्त है, जो रासायन-मुक्त कृषि को बढ़ावा देती है।

प्राकृतिक खेती क्या है?

- यह एक रासायन-मुक्त खेती पद्धति है, जिसमें पशुपालन (विशेषतः देशी नस्ल की गाय) को एकीकृत प्राकृतिक खेती विधियों और विविध फसल प्रणालियों के साथ जोड़ा जाता है, जो भारतीय पारंपरिक ज्ञान पर आधारित होती हैं।
- यह भारतीय परंपरा में निहित है, जिसे पारिस्थितिकी, संसाधन पुनर्चक्रण और खेत-आधारित संसाधनों के अनुकूलन की आधुनिक समझ से समृद्ध किया गया है।
- इसे एक कृषि पारिस्थितिकी आधारित विविधीकृत कृषि प्रणाली माना जाता है, जो फसलों, वृक्षों और पशुधन को कार्यात्मक जैव विविधता के साथ एकीकृत करती है।
- यह मुख्यतः खेत पर उपलब्ध जैविक सामग्री के पुनर्चक्रण पर आधारित होती है, जिसमें जैविक मल्टिचिंग, गोबर-

गोमूत्र से बने घोलों का उपयोग, मृदा की वायु संचारण क्षमता बनाए रखना और सभी कृत्रिम रासायनिक इनपुट्स को हटाना शामिल है।

वर्तमान स्थिति

- आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, उत्तर प्रदेश और केरल जैसे कई राज्य प्राकृतिक खेती में अग्रणी हैं और उन्होंने सफल मॉडल विकसित किए हैं।

लाभ

- मृदा स्वास्थ्य में सुधार:** प्राकृतिक खेती से मृदा में जैविक पदार्थ और सूक्ष्मजीव गतिविधि बढ़ती है, जिससे पोषक तत्वों का चक्रण और जल धारण क्षमता बेहतर होती है।



- इनपुट लागत में कमी:** रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों को हटाकर किसान लागत में उल्लेखनीय बचत करते हैं, जिससे उनकी आय में वृद्धि होती है।
- जलवायु सहनशीलता:** विविध फसल प्रणाली एवं जैविक इनपुट्स खेतों को अनियमित मौसम से बचाते हैं और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करते हैं।
- स्वस्थ खाद्य उत्पादन:** रासायन-मुक्त उत्पाद जनस्वास्थ्य को समर्थन देते हैं और जैविक खाद्य की बढ़ती उपभोक्ता मांग के अनुरूप हैं।

चुनौतियाँ

- उपज की अनिश्चितता:** रासायनिक से प्राकृतिक इनपुट्स में परिवर्तन के दौरान, विशेष रूप से उच्च इनपुट क्षेत्रों में, प्रारंभिक उपज में गिरावट हो सकती है।
- ज्ञान की कमी:** किसानों को मृदा जीवविज्ञान, कम्पोस्टिंग और रासायन-मुक्त कीट प्रबंधन में प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

- बाजार से जुड़ाव:** प्राकृतिक उत्पादों के लिए समर्पित आपूर्ति श्रृंखला और प्रमाणन तंत्र की कमी से लाभप्रदता सीमित होती है।
- केंद्र और राज्य सरकारों के बीच समन्वय** तथा वर्तमान कृषि योजनाओं के साथ संरेखण अभी भी असमान है।

उठाए गए कदम

- प्राकृतिक खेती पर राष्ट्रीय मिशन (NMNF) एक स्वतंत्र केंद्र प्रायोजित योजना है, जिसे नवंबर 2024 में पारंपरिक ज्ञान पर आधारित रासायन-मुक्त, पारिस्थितिकी-आधारित प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया गया।

सुझाव और आगे की राह

- प्राकृतिक खेती भारतीय कृषि में एक परिवर्तनकारी बदलाव का संकेत देती है, जिसका उद्देश्य उत्पादकता और पर्यावरणीय स्थिरता के बीच संतुलन स्थापित करना है।
- यह बाहरी इनपुट्स पर निर्भरता को कम करती है, जिससे यह एक किफायती दृष्टिकोण बनती है, जिसमें ग्रामीण रोजगार और विकास को बढ़ावा देने की क्षमता है।
- इसके व्यापक प्रसार के लिए प्रमुख रणनीतियों में शामिल हैं:
 - प्रशिक्षित प्रशिक्षकों और मॉडल फार्मों के माध्यम से विस्तार सेवाओं को सुदृढ़ करना
 - मृदा स्वास्थ्य और उत्पादकता पर दीर्घकालिक अनुसंधान में निवेश करना
 - प्रमाणन, ब्रांडिंग और उचित मूल्य निर्धारण के साथ सुदृढ़ बाजार पारिस्थितिकी तंत्र का विकास करना।

Source :TH

प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना और दलहन आत्मनिर्भरता मिशन

संदर्भ

- प्रधानमंत्री मोदी ने नई दिल्ली में एक विशेष कृषि कार्यक्रम के दौरान दो नई कृषि योजनाएँ — प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना (PMDDKY) और दलहन आत्मनिर्भरता मिशन — का शुभारंभ किया।

प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना (PMDDKY)

- यह 11 मंत्रालयों की 36 उप-योजनाओं को समन्वित रूप से जोड़ने वाली एक पहल है, जिसका उद्देश्य आकांक्षी जिलों में कृषि प्रगति को तीव्र करना है।
- यह योजना 100 कम प्रदर्शन करने वाले कृषि जिलों को लक्षित करती है, जिसके लिए ₹24,000 करोड़ का वार्षिक व्यय 6 वर्षों तक (2025-26 से शुरू) निर्धारित किया गया है।
 - जिलों की पहचान तीन प्रमुख संकेतकों के आधार पर की जाएगी — कम उत्पादकता, कम फसल तीव्रता और कम ऋण वितरण।
- लक्षित लाभार्थी:** 1.7 करोड़ किसान।
- एक डिजिटल डैशबोर्ड, किसान ऐप एवं जिला रैंकिंग प्रणाली पारदर्शिता, पहुंच और जवाबदेही सुनिश्चित करेंगे।
- योजना के उद्देश्य:**
 - कृषि उत्पादकता को बढ़ाना।
 - फसल विविधीकरण और सतत कृषि पद्धतियों को प्रोत्साहित करना।
 - पंचायत और ब्लॉक स्तर पर कटाई के बाद भंडारण क्षमता को बढ़ाना।
 - विश्वसनीय जल पहुंच के लिए सिंचाई अवसंरचना को सुधारना।
 - किसानों को अल्पकालिक और दीर्घकालिक कृषि ऋण तक बेहतर पहुंच प्रदान करना।

प्रधान धन-धन्य कृषि योजना के लिए कार्यान्वयन संरचना

राष्ट्रीय स्तर की निगरानी संस्थाएँ

- दो टीमों गठित की जाएंगी: एक केंद्रीय मंत्रियों के अधीन, और 1 अवर सचिव और विभागीय अधिकारी।
- प्रत्येक जिले के लिए केंद्रीय नोडल अधिकारी भी नियुक्त किये जाएंगे।

राज्य-स्तरीय संचालन समूह

- जिला स्तर की टीमों के समान।
- जिलों में योजनाओं का प्रभावी अभिसरण सुनिश्चित किया जाएगा।

जिला स्तरीय समितियाँ

- जिला धन-धान्य कृषि योजना (डीडीकेवाई) जिला कलेक्टर या ग्राम पंचायत की अध्यक्षता में एक समिति स्थापित की जाएगी।
- समिति में प्रतिनिधित्व किसान और विभागीय अधिकारी भी शामिल होंगे।
- जिला कृषि एवं संबद्ध क्रियाकलाप योजना तैयार करने का कार्य सौंप गया।
- केंद्रीय डैशबोर्ड पर 117 प्रमुख निष्पादन संकेतकों (KPI) का उपयोग करके प्रगति पर नज़र रखी जाएगी।

दलहन आत्मनिर्भरता मिशन

- यह मिशन 2025-26 से 2030-31 तक के लिए ₹11,440 करोड़ के बजट आवंटन के साथ शुरू किया गया है।
- इसका उद्देश्य भारत को दालों के उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाना है, ताकि बढ़ती घरेलू मांग के मद्देनज़र आयात पर निर्भरता कम हो सके।
- इसका लक्ष्य घरेलू दाल उत्पादन को 350 लाख टन तक बढ़ाना और 2030-31 तक खेती का क्षेत्रफल 310 लाख हेक्टेयर तक विस्तारित करना है।
- इसका उद्देश्य चार वर्षों तक तुर, उड़द और मसूर की 100 प्रतिशत खरीद न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) पर सुनिश्चित करना है।
- कुल 88 लाख मुफ्त बीज किट और 126 लाख क्विंटल प्रमाणित बीज किसानों को वितरित किए जाएंगे।

Journey Towards Aatmanirbharta in Pulses



Source: NITI Aayog

Source: AIR

संक्षिप्त समाचार

थिटू द्वीप

संदर्भ

- थिटू द्वीप के पास, जो कि स्प्रेटली द्वीप समूह का हिस्सा है, एक चीनी तटरक्षक जहाज और एक फिलीपीनी सरकारी पोत के बीच टक्कर हो गई।

स्प्रेटली द्वीप समूह के बारे में

- स्प्रेटली द्वीप समूह दक्षिण चीन सागर में स्थित 100 से अधिक छोटे द्वीपों, प्रवाल भित्तियों और एटोल्स का समूह है।

- थिटू द्वीप, जिसे पग-आसा द्वीप भी कहा जाता है, दक्षिण चीन सागर में स्थित स्प्रेटली द्वीप समूह का दूसरा सबसे बड़ा प्राकृतिक द्वीप है।
- हेग स्थित स्थायी मध्यस्थता न्यायालय (PCA) ने निर्णय दिया कि चीन की “नाइन-डैश लाइन” का संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून संधि (UNCLOS) के तहत कोई कानूनी आधार नहीं है और यह फिलीपींस के विशेष आर्थिक क्षेत्र (EEZ) में उसकी संप्रभुता का उल्लंघन करता है।
 - हालाँकि, चीन ने इस निर्णय को मानने से मना कर दिया है।



दक्षिण चीन सागर

- यह पश्चिमी प्रशांत महासागर का एक सीमांत सागर है।
- यह दक्षिणी चीन, ताइवान, फिलीपींस, इंडोनेशिया, वियतनाम, थाईलैंड, कंबोडिया और मलेशिया के बीच स्थित है।
- यह प्रशांत और हिंद महासागरों के बीच नौवहन के लिए एक महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग एवं संगम बिंदु है।

दक्षिण चीन सागर में विवाद

- चीन, वियतनाम, फिलीपींस, ब्रुनेई, मलेशिया और ताइवान जैसे दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के बीच दक्षिण चीन सागर क्षेत्र को लेकर सदियों से विवाद चला आ रहा है।
- इस विवाद के दो प्रमुख बिंदु हैं: स्प्रेटली द्वीप समूह और पारासेल द्वीप समूह।
- नाइन-डैश लाइन:** चीन इस क्षेत्र के अधिकांश हिस्से पर दावा करता है और इस दावे का केंद्र बिंदु है यू-आकार की ‘नाइन-डैश लाइन’, जो इन जल क्षेत्रों के लगभग 90 प्रतिशत हिस्से को शामिल करती है।
 - यह बिंदुयुक्त रेखा 1940 के दशक के चीनी मानचित्रों से ली गई थी और यह बीजिंग के समुद्र और उसमें स्थित सभी भू-आकृतियों पर दावे को दर्शाती है।

डूरंड रेखा

समाचारों में

- डूरंड रेखा पर अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच सीमा पर संघर्ष शुरू हो गया।

डूरंड रेखा के बारे में

- डूरंड रेखा 2,640 किमी लंबी स्थलीय सीमा है, जिसकी स्थापना 1893 में ब्रिटिश भारत के तत्कालीन विदेश सचिव सर मॉर्टिमर डूरंड और अफगानिस्तान के शासक अमीर अब्दुर रहमान खान के बीच हुए एक समझौते के अंतर्गत की गई थी।
- इस रेखा का उद्देश्य ब्रिटिश भारत और अफगानिस्तान के प्रभाव क्षेत्रों को परिभाषित करना था, जिससे पश्तून एवं बलोच जातीय समुदायों को दोनों पक्षों में विभाजित कर दिया गया।



Source: BT

थैलेसीमिया

समाचारों में

- केरल में थैलेसीमिया रोगी गंभीर स्वास्थ्य जोखिमों का सामना कर रहे हैं, क्योंकि ल्यूकोसाइट फ़िल्टर सेट और आयरन कीलेशन दवाओं की कमी हो गई है।

क्या आप जानते हैं?

- ल्यूकोसाइट फ़िल्टर, जो रक्त संक्रमण के दौरान प्रतिकूल प्रतिक्रियाओं को रोकने के लिए आवश्यक होता है, कई सरकारी अस्पतालों में उपलब्ध नहीं है, जिससे रोगियों को संक्रमण सीमित करना पड़ रहा है और उनके हीमोग्लोबिन स्तर खतरनाक रूप से कम हो रहे हैं।
- आयरन कीलेशन दवाएँ, जो संक्रमण के कारण शरीर में आयरन की अधिकता से अंगों को हानि से बचाने के लिए आवश्यक होती हैं, कथित तौर पर लगभग एक वर्ष से अनुपलब्ध हैं।

थैलेसीमिया

- थैलेसीमिया आनुवंशिक रक्त विकारों का एक समूह है, जिसमें शरीर पर्याप्त मात्रा में हीमोग्लोबिन नहीं बना पाता — यह लाल रक्त कोशिकाओं में पाया जाने वाला प्रोटीन है जो ऑक्सीजन को वहन करता है।
- यह एनीमिया का कारण बनता है और थकान व कमजोरी जैसे लक्षण उत्पन्न करता है।
- इसे अल्फा और बीटा थैलेसीमिया में वर्गीकृत किया जाता है, जिसकी तीव्रता हल्के से लेकर जानलेवा तक हो सकती है।
- इसका प्रबंधन नियमित रक्त संक्रमण और आयरन कीलेशन थेरेपी के माध्यम से किया जाता है।

सरकारी प्रयास

- केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय, कोल इंडिया लिमिटेड के सहयोग से थैलेसीमिया बाल सेवा योजना (TBSY) संचालित करता है, जिसके अंतर्गत पात्र रोगियों को देशभर के 17 सूचीबद्ध अस्पतालों में बोन मैरो ट्रांसप्लांट (BMT) के लिए ₹10 लाख तक की वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। यह सहायता CIL की CSR निधि से दी जाती है।
- राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को थैलेसीमिया की रोकथाम और प्रबंधन, ब्लड बैंक, डे केयर सेंटर, दवाएँ, लैब सेवाएँ, जागरूकता कार्यक्रम एवं स्टाफ प्रशिक्षण सहित स्वास्थ्य सेवाओं

को बेहतर बनाने के लिए उनके प्रस्तुत योजनाओं के आधार पर सहायता प्रदान की जाती है।

Source : TH

मैत्री II: अंटार्कटिका में भारत का नया मोर्चा

संदर्भ

- वित्त मंत्रालय ने भारत के आगामी अनुसंधान केंद्र 'मैत्री II' की स्थापना को स्वीकृति दे दी है, जो पूर्वी अंटार्कटिका में बनाया जाएगा और जनवरी 2029 तक पूर्ण होने की योजना है।

भारत की अंटार्कटिका में उपस्थिति

- 1983 में भारत ने अंटार्कटिका में प्रथम स्थायी आधार 'दक्षिण गंगोत्री' स्थापित किया था, जो अब संचालन में नहीं है।
- वर्तमान में भारत के पास अंटार्कटिका में दो अनुसंधान केंद्र हैं — 'मैत्री' और 'भारती'।
 - मैत्री:** यह 1989 से संचालन में है और क्वीन मॉड लैंड के शिर्माकर ओएसिस नामक पथरीले पर्वतीय क्षेत्र में स्थित है।
 - भारती:** यह नया केंद्र 2012 में शुरू किया गया था। यह अंटार्कटिका में थाला फियोर्ड और क्विल्टी बे के बीच, स्टोर्नेस प्रायद्वीप के पूर्व में स्थित है।

मैत्री II के बारे में

- नोडल एजेंसी:** राष्ट्रीय ध्रुवीय और महासागरीय अनुसंधान केंद्र (NCPOR), गोवा।
- अनुमानित लागत:** सात वर्षों में ₹2,000 करोड़।
- स्थान:** पूर्वी अंटार्कटिका, शिर्माकर ओएसिस के पास, पुराने हो चुके मैत्री स्टेशन का स्थान लेगा।
- हरित अनुसंधान केंद्र:** इसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर संचालित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है — गर्मियों में सौर ऊर्जा और पूरे वर्ष पवन ऊर्जा, जिससे जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम होगी।

Source: IE

अंतर्राष्ट्रीय ब्लू फ्लैग प्रमाणन

समाचारों में

- महाराष्ट्र के पाँच समुद्र तटों को अंतर्राष्ट्रीय ब्लू फ्लैग प्रमाणन प्राप्त हुआ है।
 - इस सूची में श्रीवर्धन और नागांव समुद्र तट, पारनाका, गुहागर एवं लाडघर समुद्र तट शामिल हैं।

ब्लू फ्लैग प्रमाणन क्या है?

- ब्लू फ्लैग एक वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त ईको-लेबल है, जो उन समुद्र तटों, मरीना और सतत नौकायन संचालकों को दिया जाता है जो पर्यावरण, सुरक्षा, शिक्षा एवं पहुंच के सख्त मानकों को पूरा करते हैं।
- इसे प्रायः समुद्र तट स्वच्छता का स्वर्ण मानक कहा जाता है।
- यह डेनमार्क स्थित गैर-लाभकारी संस्था फाउंडेशन फॉर एनवायरनमेंटल एजुकेशन (FEE) द्वारा प्रशासित किया जाता है, जिसे UNEP और UNESCO द्वारा मान्यता प्राप्त है।
- भारत में ब्लू फ्लैग प्रमाणन को एकीकृत तटीय क्षेत्र प्रबंधन कार्यक्रम के अंतर्गत BEAMS (बीच एनवायरनमेंट एंड एस्थेटिक्स मैनेजमेंट सर्विसेज) के माध्यम से लागू किया जाता है।
- भारत में इसकी नोडल एजेंसी है सोसाइटी ऑफ इंटीग्रेटेड कोस्टल मैनेजमेंट (SICOM), जो पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) के अंतर्गत कार्य करती है।

भारत में ब्लू फ्लैग समुद्र तट (2025)

- भारत में 12 प्रमाणित समुद्र तट हैं:
 - शिवराजपुर (गुजरात)
 - घोघला (दीव)
 - कासरकोड (कर्नाटक)
 - पदुबिद्री (कर्नाटक)
 - काप्पड (केरल)
 - रुशिकोंडा (आंध्र प्रदेश)
 - गोल्डन बीच/पुरी (ओडिशा)

- ▲ राधानगर (अंडमान और निकोबार द्वीप समूह)
- ▲ कोवलम (तमिलनाडु)
- ▲ ईडन बीच (पुडुचेरी)
- ▲ मिनिक्ॉय थुंडी (लक्षद्वीप)
- ▲ कदमत (लक्षद्वीप)

Source: AIR

IUCN विश्व विरासत आउटलुक 2025

समाचारों में

- IUCN वर्ल्ड हेरिटेज आउटलुक 4 ने एक चिंताजनक वैश्विक पर्यावरणीय प्रवृत्ति को उजागर किया है, जिसमें जलवायु परिवर्तन प्राकृतिक विश्व धरोहर स्थलों के लिए सबसे बड़ा खतरा बनकर उभरा है।

मुख्य बिंदु

- रिपोर्ट के अनुसार 43% स्थल गंभीर जलवायु खतरों का सामना कर रहे हैं, जबकि आक्रामक विदेशी प्रजातियाँ 30% स्थलों को प्रभावित कर रही हैं, और वन्यजीव एवं पौधों की बीमारियाँ तीव्रता से बढ़ रही हैं — जो अब 9% स्थलों को प्रभावित कर रही हैं, जबकि 2020 में यह आंकड़ा मात्र 2% था।
- कुल सकारात्मक संरक्षण दृष्टिकोण 2020 के 62% से घटकर 2025 में 57% हो गया है।
- **कंचनजंघा राष्ट्रीय उद्यान** एकमात्र स्थल है जिसे संरक्षण दृष्टिकोण में “अच्छा” दर्जा प्राप्त है।
- **सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान** का दर्जा “कुछ चिंताओं के साथ अच्छा” (2020) से गिरकर “गंभीर चिंता” (2025) हो गया है, जिसका कारण समुद्र स्तर में वृद्धि, लवणता और चक्रवात हैं।
- **मानस राष्ट्रीय उद्यान** “गंभीर चिंता” की श्रेणी में बना हुआ है, जिसका कारण है शिकार और अतिक्रमण।

Source: TH

अभ्यास ऑस्ट्राहिंड(AUSTRAHIND) 2025

समाचारों में

- ऑस्ट्रेलिया में एक्सरसाइज़ AUSTRAHIND 2025 का चौथा संस्करण शुरू हो गया है।

अभ्यास के बारे में

- AUSTRAHIND की शुरुआत 2022 में राजस्थान में हुई थी, और यह अब एक वार्षिक द्विपक्षीय सैन्य अभ्यास बन चुका है, जो भारत एवं ऑस्ट्रेलिया में बारी-बारी से आयोजित किया जाता है।
- 2025 का संस्करण खुले और अर्ध-रेगिस्तानी क्षेत्रों में कंपनी-स्तरीय संयुक्त अभियानों पर केंद्रित है, जिसमें संयुक्त योजना, सामरिक अभ्यास एवं विशेष हथियार कौशल शामिल हैं।

Source: PIB

केंटन आर. मिलर पुरस्कार

संदर्भ

- काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की फील्ड डायरेक्टर डॉ. सोनाली घोष IUCN वर्ल्ड कंजर्वेशन कांग्रेस में प्रतिष्ठित WCPA-केंटन मिलर पुरस्कार प्राप्त करने वाली प्रथम भारतीय बनीं।
 - ▲ यह कार्यक्रम अबू धाबी, संयुक्त अरब अमीरात में आयोजित हुआ।

केंटन आर. मिलर पुरस्कार के बारे में

- यह पुरस्कार 2006 में स्थापित किया गया था। राष्ट्रीय उद्यानों और संरक्षित क्षेत्रों की स्थिरता में नवाचार के लिए केंटन आर. मिलर पुरस्कार प्रत्येक दो वर्षों में वर्ल्ड कमीशन ऑन प्रोटेक्टेड एरियाज (WCPA) द्वारा प्रदान किया जाता है।
 - ▲ WCPA, इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर (IUCN) की छह तकनीकी आयोगों में से एक है।
- यह पुरस्कार उन व्यक्तियों को सम्मानित करता है जो राष्ट्रीय उद्यानों और संरक्षित क्षेत्रों के संरक्षण में नवाचार एवं नेतृत्व का प्रदर्शन करते हैं, विशेष रूप से उनकी दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने में।
- यह पुरस्कार डॉ. केंटन आर. मिलर के नाम पर रखा गया है, जो IUCN के पूर्व महानिदेशक और संरक्षित क्षेत्र प्रबंधन में एक प्रमुख वैश्विक नेता थे।

Source: TH

एबेल पुरस्कार 2025

संदर्भ

- जापानी गणितज्ञ मासाकी काशिबारा को बीजगणितीय विश्लेषण और प्रतिनिधित्व सिद्धांत में योगदान के लिए एबेल पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया गया।

मासाकी काशिबारा के योगदान

- उन्होंने D-मॉड्यूल के सिद्धांत की शुरुआत की, जो रैखिक आंशिक अवकल समीकरणों (PDEs) की प्रणालियों का अध्ययन करने के लिए एक बीजगणितीय ढांचा है।
- उन्होंने माइक्रो-सपोर्ट और कैरेक्टरिस्टिक वेरायटीज़ जैसे उपकरण विकसित किए, जो यह स्पष्ट करते हैं कि समीकरणों में असामान्यताएँ कैसे फैलती हैं।
- उनका शीफ थ्योरी पर कार्य यह समझने में सहायक रहा कि स्थानीय विश्लेषणात्मक डेटा वैश्विक ज्यामितीय संरचना से कैसे जुड़ता है।

एबेल पुरस्कार के बारे में

- एबेल पुरस्कार एक अंतरराष्ट्रीय सम्मान है जो गणित में उत्कृष्ट वैज्ञानिक कार्य को मान्यता देता है, और इसे प्रायः गणितज्ञों के लिए नोबेल पुरस्कार के समकक्ष माना जाता है।

- यह 19वीं सदी के नॉर्वेजियन गणितज्ञ नील्स हेनरिक एबेल के सम्मान में नामित है।

- प्रदाता:** नॉर्वे सरकार की ओर से नॉर्वेजियन एकेडमी ऑफ साइंस एंड लेटर्स द्वारा प्रदान किया जाता है।
- चयन प्रक्रिया:** अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त पाँच गणितज्ञों की विशेषज्ञ समिति विजेताओं की सिफारिश नॉर्वेजियन एकेडमी को करती है।
- यह पुरस्कार नॉर्वेजियन संसद द्वारा 2002 में स्थापित किया गया था और प्रथम बार 2003 में प्रदान किया गया।
 - यह किसी भी आयु और राष्ट्रियता के गणितज्ञ को दिया जा सकता है।

कुछ प्रमुख विजेता

- जीन-पियरे सेरे:** प्रथम विजेता (2003), जिन्होंने बीजगणितीय ज्यामिति और टोपोलॉजी में योगदान दिया।
- श्रीनिवास एस. आर. वरदन:** भारतीय मूल के गणितज्ञ, जिन्होंने 2007 में यह पुरस्कार जीता।
- मिशेल टालाग्रां (फ्रांस):** प्रायिकता सिद्धांत और क्रियात्मक विश्लेषण में योगदान के लिए 2024 में विजेता रहे।

Source: TH

